खुशी

मिली है खुशी ऐसी जिसका कोई ठीकाना नही।
अविनाशी है जो कोई भी छीन सकता नही।
पल भर की नही सदा संग में रहती ।
जागीर है ऐसी कोई लुट जिसे सकता नही।
अखुट है बाँटने से भी खाली होता उसका भंडारा नही।
संगम की सौगात है जन्म जन्म साथ चलती ।
बेशुमार है दौलत जिसका नशा कभी फीका पड़ता नही।
रूहानियत का श्रृंगार है जिसका कोई मुकाबला नही।
प्रभु प्रेम का खजाना है जो कभी भी कम होता नही।
देते चलो बांटते चलो बढता ही जाएगा ।
यह विनाशी नही जो मिट जाए एक दिन।
रुहू का संस्कार है रुहू में संग हमेशा रहता।
सुप्रीम रुहु से मिला है वारसा जो कभी खोता नही।

ॐ शांति